Semester-1 mdc -2025-2029.
(Interpersonal components) अन्तर्वैयक्तिक तत्व -

संवेगिक बुद्धिमता के इस तत्व में दूसरे के संवेगों को समझना तथा उसके प्रति संवेदनशीलता दिखलाना तथा संवेगों को उचित ढंग से संचालित करना आदि सम्मिलित होता है। इस श्रेणी के दो तत्व प्रधान हैं -

(i). परानुभूति: दूसरे के संवेगों की पहचान करना
परानुभूति संवेगिक बुद्धिमता का एक अन्य तत्व है। जिसमे व्यक्ति दूसरों के अभिप्राय एवं संवेगों को समझता है। और उनकी उचित पहचान करता है। परानुभूति का आधार आत्म-बोध होता है अगर व्यक्ति के अपने संवेगों की समझ नहीं होती है तो बहुत उम्मीद इस बात की है कि वह दूसरों के संवेगों को न तो ठीक ढंग से समझेगा और न ही उनके प्रति संवेदनशीलता विकसित करेगा परानुभूति का सबसे प्रमुख स्रोत है अशाब्दिक व्यवहार में व्यक्ति का हाव-भाव, वाक् भाव, दूसरों की आनन अभिव्यक्ति आदि - अशाब्दिक व्यवहार के संयुक्त में संवेग की मात्रा वास्तविकता पायी है। व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति इसी माध्यम से व्यक्त करता है।

(ii) सम्बन्धों को संचालित करना - दूसरों के साथ उत्तम सम्बन्ध को संचालित करना भी संवेगिक बुद्धिमता का एक महत्वपूर्ण तत्व है। व्यक्ति ऐसे होते है। जो दूसरों के साथ उत्तम एवं संतोषजनक सम्बन्ध बनाए रखने में सक्षम होते है। वास्तव में संवेगिक बुद्धिमता का यह तत्व है जो दो अन्य तत्वों अर्थात अपने संवेगों को प्रबन्धित करके रखने की क्षमता तथा परानुभूति का परिणाम होता है।

जिन व्यक्तियों में इन दोनों तत्व की प्रधानता होती है वे लोग आसानी से दूसरों के साथ उत्तम एवं संतोषजनक सम्बन्ध बनाए रखते हैं। और उसका ठीक ढंग से संचालन भी करते हैं।

सांवेगिक बुद्धिमता के इन उपरोक्त तत्वों जिन पर सैलोवी एवं मेयर ने सुझाव दिया था के अलावा भी एक और कारक है। जिसे सांवेगिक बुद्धिमता का तत्व माना जा सकता है। और वह कारक है आशावादिता जो लोग आशावादी होते हैं उन्हें यह विश्वास होता है कि एक दिन उनकी सभी चीजें ठीक हो जाएंगी, आशावादिता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि किस तरह से आशावादी लोग अपनी सफलता एवं असफलता की व्याख्या करते हैं। जब एक आशावादी व्यक्ति को असफलता हाथ लगती है तो वह उस असफलता का कारण कुछ विशेष परिस्थिति बतलाता है। जिसे परिवर्तित किया जा सकता है। क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि कड़ी मेहनत करके वे अगली बार सफल हो सकते हैं। परन्तु जब एक निराशावादी व्यक्ति असफल होता है तो वह अपने आप को ही दोषी मानने लगता है और वह उस असफलता का कारण कुछ ऐसा मानने लगते हैं जिसे बदला नहीं जा सकता है।

किसी / भी शासन व्यवस्था में मुख्य रूप से तीन आयामों की आवश्यकता होती है।

(i) एक कानून के कानून की निर्माणकर्ता

(ii) उन कानूनों के पालन के लिए उचित स्टाफ, कुशल प्रबन्धक एवं कर्मचारी

(iii) प्रशासन, नागरिक एवं प्रशासक के बीच की कड़ी

Teacher's Signature: ... 09/11/25